SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# प्रतिभा

सत्यमेव जयते

## वार्षिक हिंदी पत्रिका

## संयुक्त अंक-4

## वर्ष – 2024

**प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश**
**और**
**प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) आंध्र प्रदेश का कार्यालय**
**विजयवाड़ा-520002**

# प्रतिभा पत्रिका परिवार
# वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका
# अंक-4 : वर्ष - 2024


**मुख्य संरक्षक**
श्री चंद्र मौलि सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)

**प्रधान संपादक**
श्री बानोत राकेश नायक
उप महालेखाकार (प्रशासन)/लेखा एवं हक.

**सलाहकार संपादक**
सुश्री सत्या एल.आर.
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)

**संपादक**
श्री फूल सिंह
हिंदी अधिकारी

**परामर्श समिति**

श्री भास्कर कल्लूरु, वरिष्ठ उपमहालेखाकार(प्रशासन)/लेखापरीक्षा

सुश्री साईश्री, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री गोविंद कुमार, हिंदी अधिकारी

श्री धीरज कुमार रॉय, वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री अपूर्वा सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री अंकिता कोईरी, कनिष्ठ अनुवादक

श्री धर्मेंद्र शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक


पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

# विषय वस्तु


| | |
|---|---|
| माननीय गृहमंत्री का संदेश | 1 |
| प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का संदेश | 3 |
| प्रधान संपादक का संदेश | 4 |
| वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन/ले.प.) का संदेश | 5 |
| संपादकीय | 6 |
| पाठकों की प्रतिक्रिया | 7 |
| अनुक्रमणिका | 9 |
| लेख एवं कविताएं | 12 |
| कार्यालयीन गतिविधियाँ | 55 |

**अमित शाह**
**गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री**
**भारत सरकार**

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

**नई दिल्ली**
**14 सितंबर, 2024**

**(अमित शाह)**

## मुख्य संरक्षक का संदेश.................................

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "प्रतिभा" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के समान ही राजभाषा हिंदी को सम्मान एवं गौरव प्रदान करना हमारा कर्तव्य है। वास्तव में हमारी यह पत्रिका हिंदी भाषा की विविध विधाओं का एक गुलदस्ता है। रचनाकारों ने अपनी कविताओं और लेखों के माध्यम से अपने मन के भावों और विचारों को बहुत ही सरल एवं रुचिकर ढंग से प्रस्तुत कर इस कर्तव्य को बखूबी निभाया है। इसके लिए मैं संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ। पत्रिका के सफल सम्पादन पर संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चंद्र मौलि सिंह
प्रधान महालेखाकार

## प्रधान संपादक का संदेश.............................

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "प्रतिभा" के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर मैं अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा के प्रति निष्ठा का परिचायक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ रचनाकारों की लेखन प्रतिभा के साथ-साथ राजभाषा के प्रति उनके प्रेम को भी इंगित करती हैं।

रचनाकारों के कुशल प्रयास के लिए मैं उनकी सराहना करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि आप सब के सहयोग से पत्रिका अपने अनवरत सफल प्रकाशन से उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

बनोत राकेश नाईक
उप महालेखाकार (प्रशासन)

## संदेश

कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रतिभा ' का चतुर्थ अंक आपको सहर्ष समर्पित है। यह अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय से इतनी सुंदर पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता एवं मेल-मिलाप की भाषा है। इसके विकास पर ही हमारा साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय विकास निर्भर है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में 'प्रतिभा' पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। संविधान में यह प्रावधान किया गया है कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' एवं लिपि 'देवनागरी' होगी। अतः यह हमारा नैतिक दायित्व है कि हम इसके प्रचार-प्रसार में अपना यथोचित योगदान दें। मैं, सभी रचनाकारों के साथ-साथ, कुशल संपादन के लिए पत्रिका परिवार को भी हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भास्कर कल्लूरु
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन/ले.प.)

## संपादकीय

लेखापरीक्षा और लेखा एवं हकदारी कार्यालयों की संयुक्त वार्षिक हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” के चतुर्थ अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हमारी कार्यालयीन पत्रिका “प्रतिभा” के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। हिंदी का विकास एवं प्रचार-प्रसार करना हमारा संवैधानिक दायित्व हैं। हमें इसे संवैधानिक दायित्व के साथ-साथ अपना व्यक्तिगत कर्तव्य भी समझना चाहिए। जिस प्रकार हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आंदोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बांधने का अभूतपूर्व कार्य किया, उसी प्रकार इस पत्रिका ने कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया हैं।

सरकारी कामकाज में संघ सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का अनुपालन करना हमारा परम कर्तव्य हैं और अनुपालन के लिए हम दृढ़ संकल्पित हैं। हमें अपने दैनिक सरकारी काम-काज में हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के सरल शब्दों का प्रयोग भी करना चाहिए और अन्य भाषाओं के नए शब्दों को ग्रहण करने में संकोच नहीं करना चाहिए। कार्यालयीन पत्रिका अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सृजनात्मकता, साहित्य के प्रति रुचि और वैचारिक सकारात्मकता का प्रतीक है। पत्रिका हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण तैयार करने में एक सफल एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हमें पत्रिका के इस अंक से संबन्धित आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

फूल सिंह
हिन्दी अधिकारी

# पाठकों की प्रतिक्रिया

325341/2023/RAJBHASHA (PDA (ECoR)-BHUBANESWAR)
/464553/2023

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24 — दिनांक- 05.12.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्रप्रदेश का कार्यालय,
विजयवाड़ा- 520002 (आंध्रप्रदेश)
ईमेल- agaeandhrapradesh@cag.gov.in

**विषय-** हिंदी गृह पत्रिका **"प्रतिभा"** के **तृतीय** अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका **"प्रतिभा"** का **तृतीय** अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

| क्रम | रचनाकार | रचनाएँ |
|---|---|---|
| 1. | प्रियंका, डी.ई.ओ. | नजर का टीका |
| 2. | नीरज मित्तल, लेखापरीक्षक | अनोखी दावत |
| 3. | अमित मालिक, लिपिक | संघर्ष |
| 4. | सौरभ तोमर, लेखाकार | किसान- मालिक या नौकर |
| 5. | कृष्णा अग्रवाल, पत्नी-श्री नीरज मित्तल | मेरी परछाई |

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।
यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

Signed by Kirti Shree
Date: 12-12-2023 13:13:07
Reason: Approved

दूरभाष नं.-0674-2300311 ई-मेल- pdaecoarc@cag.gov.in / rajbhasha.ecorly@cag.gov.in

---

**कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.**
**53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011**

क्र.हि.क./पत्रा-7/ जावक - 62 — दिनांक-3.11.2023

प्रति,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक)
आंध्र प्रदेश का कार्यालय
विजयवाड़ा-520002

विषय : हिन्दी ई-पत्रिका "प्रतिभा" के तृतीय अंक की पावती बाबत।
संदर्भ : आप के पत्र सं.प्र.म.ले.(ले.एवं ह.)/आं.प्र./रा.भा.अ./2023-24/ दिनांक 11.10.2023

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "प्रतिभा" के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर माँ की ममता, खुशियों की चाबी, संघर्ष, बचपन के दिन, मेरे मन में उमड़ता प्यार, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। रंगीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

---

Admin/O.M./05(67)/2022-23
/439224/2023

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग — INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

सेवा में,

[illegible]

विषय:- [illegible]

महोदय,

[illegible]

[illegible]

भवदीय

Signed by
Devendra Pratap Srivastava
Date: 08-11-2023 14:48:37

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

[illegible]

---

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj - 211001
Phone : 2421354, 2425063, 2624467 Fax : 0532-2423485

**पत्रांक - क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2023-24/553 दिनांक 31.10.2023**

सेवा में,
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
आंध्र प्रदेश, विजयवाड़ा - 520002

**विषय:-** हिंदी पत्रिका 'प्रतिभा' के तृतीय अंक की पावती।

**संदर्भ:-** पत्रांक प्र.म.ले.(ले. एवं हक.)/आं.प्र./रा.भा.अ./2023-24/ दिनांक 11.10.2023

**महोदय,**

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रतिभा' के तृतीय अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ, साज-सज्जा एवं कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय हैं। समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। विशेषकर 'खुशियों की चाबी', 'किसान-मालिक या नौकर', 'आत्मनिर्भर भारत-एक मिशन', 'कसक', 'सफर' एवं 'अनोखी दावत' पठनीय, रुचिकर एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहे हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

**भवदीय,**

**वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार**

# पाठकों की प्रतिक्रिया

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बिहार, पटना

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), BIHAR, PATNA

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.), आंध्र प्रदेश का कार्यालय,

विजयवाड़ा-520002

विषय: कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका "प्रतिभा" के तृतीय अंक का अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT

Office of The Director General of Commercial Audit, Mumbai

दिनांक: 08/02/2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),

आंध्र प्रदेश का कार्यालय, विजयवाड़ा-520002

विषय: हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के तृतीय अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका आवरण पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानप्रद तथा उच्च कोटि की है। "खुशियों की चाबी", "कसक", "माँ की ममता", "छोटे किस्से से प्रबंधन सीख", "मेरी परछाई", "बचपन के दिन", "सफर", "कुछ ख्वाब", "अनोखी दावत", "नज़र का टीका", "हैप्पी बर्थडे", "मिलन और जुदाई" विशेष रूप से सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएं भिन्न-भिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान करती है। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। पत्रिका प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीया,

Signed by Vidya

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन

Date: 08-02-2024 11:25:50

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई

O/O THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL),MUMBAI

C-25,AUDIT BHAVAN, BANDRA KURLA COMPLEX, MUMBAI- 400 051

E-MAIL – PDACENTRALMUMBAI@CAG.GOV.IN

दिनांक : 27.11.2023

सेवा में

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा व लेखा एवं हक.)

आंध्र प्रदेश विजयवाड़ा-520002

विषय :- वार्षिक हिंदी संयुक्त ई-पत्रिका 'प्रतिभा' तीसरे अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी संयुक्त ई-पत्रिका 'प्रतिभा' तीसरे अंक' की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । इसके आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र अत्यंत मनोरम हैं । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है । निम्नलिखित रचनाकारों के रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं:-

| क्र.स | रचनाकार | रचनाएँ |
|---|---|---|
| 1. | सुश्री अपूर्वा सिंह | कसक |
| 2. | श्री सूरज सिंह | खुशियों की चाबी |
| 3. | श्री पी.मुरली कृष्णा | छोटे किस्से से प्रबंधन सीख |
| 4. | श्री शशांक सिंह | यूं ऐसे ही, कुछ ख्वाब |
| 5. | श्री नीरज मित्तल | अनोखी दावत |
| 6. | श्री श्याम किशोर सिंह | माँ की ममता |

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

INWARD 06 DEC 2023

आंध्र प्रदेश, विजयवाड़ा

Andhra Pradesh, Vijayawada-520 002

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E),

जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर

JAMMU & KASHMIR, SRINAGAR

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश का कार्यालय,

विजयवाड़ा-520002

विषय: कार्यालयीन संयुक्त हिंदी पत्रिका 'प्रतिभा' के तृतीय अंक के प्रेषण संबंधित ।

महोदय/महोदया

भवदीय,

सहायक लेखा अधिकारी

(हिंदी कक्ष)

INWARD 15 FEB

आंध्र प्रदेश, विजयवाड़ा

Andhra Pradesh, Vijayawada-520 002

# लेख एवं कहानियां


01 **कर्म प्रभाव** — 12
रविंद्र कुमार शास्त्री
पिता श्री आदित्य कुमार, स.ले.प.अ.

02 **जाति न पूछो साधु की** — 14
सुशील कुमार प्रभात
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

03 **तारापीठ** — 16
अंकिता कोईरी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

04 **होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली- एक सामान्य परिचय** — 19
डॉ. हिरल खत्री (बी.एच.एम.एस.)
पत्नी श्री जितेन्द्र कुमार खत्री, स.ले.प.अ.

05 **समाज, धर्म और राजनीति-एक निजी अंतर्यात्रा** — 22
धीरज कुमार रॉय
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

06 **एक अटूट बंधन** — 26
फूल सिंह
हिंदी अधिकारी

07 **क्यूँ न हम वादियों में खो जाएं** — 30
जितेंद्र नाथ शर्मा
वरि. उप महालेखाकार

08 **राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका** — 32
श्रीकांत कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

# कविताएं


01 **पापा का अखबार** — 36
सोनाली नाईक
पत्नी श्री आशीष के. सहायक लेखा अधिकारी

02 **माँ** — 37
मीनू सिंह
माता श्री आदित्य कुमार, स.ले.प.अ.

03 **अधूरे ख़्वाब** — 38
सुशील कुमार प्रभात
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

04 **देर कितनी लगती** — 39
परवेश कुमार
डी.ई.ओ.

05 **प्रेरणा** — 40
अंकिता कोईरी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

06 **बिखरे ख्वाब** — 41
चंद्र पाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

07 **ख्वाबों के पुलिंदे** — 42
शशांक सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

08 **गज़ल** — 44
शशांक सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

09 **नदी** 45
सोनाली नाईक
पत्नी श्री आशीष के. सहायक लेखा अधिकारी

10 **दोस्ती** 46
अमित कुमार
लेखा परीक्षक

11 **खोज** 47
सचिन कुमार मीणा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

12 **कारवां जिंदगी का** 48
जितेंद्र नाथ शर्मा
वरि. उप महालेखाकार

13 **यही अस्तित्व मेरा** 49
श्रीकांत कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

14 **इंसान एक किताब** 50
धर्मेन्द्र शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

15 **सुनो तुम....!** 52
रितिक कौशिक
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

16 **हर भूमिका निभाना पड़ता है** 53
हेमा कुमारी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

17 **घर की दहलीज़** 54
जितेंद्र नाथ शर्मा
वरि. उप महालेखाकार

# कर्म प्रभाव

**रविंद्र कुमार शास्त्री**
**पिता श्री आदित्य कुमार, स.ले.प.अ.**

एक राजा के अनुचर चोरों की तलाश में ऋषि मांडव्य के आश्रम में चले गए। वहाँ उन्होंने राजा के महल से चोरी हुए माल को बरामद किया। चोरों को भी पकड़ लिया। ऋषि मांडव्य को इस चोरी का पता नहीं था इसलिए वे उन्हें भी पकड़कर ले आए। राजा की आज्ञा से चोरों को मृत्यु दंड दिया गया। ऋषि मांडव्य को भी सूली पर चढ़ा देने का आदेश हुआ। लेकिन दैववश राजा को आभास हुआ कि ऋषि तो चोर नहीं है, तत्काल दौड़कर आया, उस जगह पहुँचा जहाँ ऋषि को सूली पर चढ़ाया जाना था। उन्हे सूली से उतारा गया, राजा ने क्षमा याचना की। ऋषि ने राजा को क्षमा कर दिया लेकिन उन्होंने यम से पूछा, मुझे तुमने सूली पर क्यों चढ़ाया और फिर सूली पर से उतारा क्यों?

यमराज ने कहा- महाराज, आपने बचपन में एक टिड्डी को कुश की नोक से छेद दिया था। उसी अपराध के कारण आपको सूली पर चढ़ाया गया। ऋषि मांडव्य कुपित हुए कहने लगे- अज्ञानवश मुझसे हुए छोटे से अपराध के लिए तुने मुझे फाँसी पर चढ़वाया इसलिए तू एक सौ वर्ष तक मृत्युलोक में रहकर मृत्त्युलोक के दुख भोगेगा।

ऋषि के इसी शाप के कारण यमराज ने विदुर के रुप में जन्म लिया और सौ साल की आयु भोगने के बाद ही यमलोक में आकर पुनः यम बने।

थोड़ा मनन कीजिए कि कर्म का अच्छा या बुरा फल अवश्य मिलता है। देर-सवेर हो सकती है, ऋषि ने बचपन में भूलवश टिड्डी को घास की नोक से छेदकर उसे दुख पहुँचाया था इसलिए उन्हें सूली पर चढ़ने का दुख भोगना पड़ा यानि दूसरे को दुख देकर स्वयं भी सुखी नहीं हुआ जा सकता।

अभिमानवश आदमी सत्ता के मद में दूसरों को मानसिक रुप से यातना देता है यह समझ कर कि यह उसका क्या कर लेगा लेकिन उसकी स्थिति उस गेंद की भांति अवश्य होती है जो एक बार तो उछल जाती है लेकिन दूसरे ही क्षण जमीन पर आ गिरती है। मनुष्य को कोई भी कर्म करने से पहले स्वयं को आंकना चाहिए कि जो वह दूसरों के लिए कर रहा है कल को वह उस के लिए भी हो सकता है। दूसरों के लिए गड्ढा खोदने से पहले सौ बार सोचना चाहिए।

**वीरभद्र स्वामी मंदिर, लेपाक्षि, अनंतपुर**

# जाति न पूछो साधु की

सुशील कुमार प्रभात
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मुझे आज भी याद है कि पहली बार मुझसे मेरी जाति मेरे गांव में किसी ने पूछी थी। तब शायद मैं छह - सात साल का रहा होगा। इस सवाल पर मैं उस वक़्त भी सकपका गया था, क्योंकि शायद मुझे पता भी नही था कि जाति क्या होती है। मैंने जवाब में उन्हें कहा था कि मैं हिन्दू हूँ। वे लोग हँसने लगे थे। फिर उन्होंने मेरे पापा का नाम पूछा और अपने मूल सवाल का जवाब हासिल कर लिया।

बीच में शायद और किसी ने पूछा हो, पर दूसरी बार का स्मरण मुझे तब का है जब मैं कॉलेज के दौरान ट्रेनिंग करने धनबाद गया था। वहां किसी ने सीधे पूछा तो किसी ने नाम से अंदाजा लगाने की कोशिश की।

हालांकि सीधे पूछ लेने वालों को मैं ज्यादा शरीफ़ मानता हूँ, बजाय उनके जो मेरे नाम में कोई जातीय झलक न पाकर पिताजी का भी नाम लगे हाथ पूछ ही लेते हैं। जवाब में मैं भी जातीय समीकरण गायब कर के उन्हें उलझा कर थोड़ा उनपे कभी कभार मन ही मन हंस लेता हूँ। कुछ लोग तो हार मान लेते हैं, पर कुछ लोग थोड़े ज्यादा ही ढीठ होते हैं। वो तीसरा सवाल में फिर सीधा पूछ लेते हैं।

मैं अक्सर उनसे पूछना चाहता हूँ कि आप क्या करेंगे मेरी जाति जानकर। पर उनकी पुरानी मानसिकता से मैं भी ज्यादा छेड़छाड़ करना पसंद नहीं करता हूँ। जब तक मैं कॉलेज में था, तब तक मैं इन सब बातों के बारे में सोचता भी नहीं था। लेकिन जब से मैंने नौकरी करना शुरू किया है, और ज़मीनी लोगों से जुड़ा हूँ, तब से मैंने इस जातीय वास्तविकता से रूबरू होना शुरू किया है।

इतना तो मैं समझ ही गया हूँ, कि लोगों के पास हर जाति का खाका तैयार है। आपकी जाति जानते ही वो आपको उस खाके में डालकर आपके बारे में एक ऊपरी राय बना लेंगे। इस जाति का होगा तो ये खूबी होगी, और ये बुराई तो होगी ही होगी। शायद इस तरीके से उन्हें अमुक इंसान को समझने में ज्यादा सहूलियत होती है। हालांकि मेरे लिए ये काफी हास्यपद है, इसके बावजूद मैं उन्हें खेलने देना चाहता हूँ।

मैं उनसे पूछता नहीं हूँ, फिर भी पूछना चाहता हूँ कि "क्या आप किसी ऐसे इंसान को जानते हैं, जिनसे आपकी अच्छी खासी जान पहचान हो, खूब बातें होती हो, पर आप उसकी जाति नहीं जानते हो?"

मैं उन सब के बारे में कोई राय नहीं बना रहा पर, पर इतना जरूर कहूंगा, कि इस सोच से उन्होंने अपने सोचने- समझने का दायरा कुछ संकुचित जरूर कर लिया है। इससे आप किसी इंसान को समझने में कुछ गलतियां भी कर सकते है। मैं आपसे अपनी या लोगों की जाति को भूलने की बात नहीं कर रहा हूँ, पर इतना जरूर कहूंगा कि इसे इतना तवज्जो न दीजिए। बाकी सबकी अपनी- अपनी समझदारी है। औऱ यहाँ सब ज्ञानी तो हैं ही।

**चिंताला वेंकटरमण स्वामी मंदिर, ताड़ीपत्री, आंध्र प्रदेश**

# तारापीठ

**अंकिता कोईरी**
**कनिष्ठ हिंदी अनुवादक**

जय काली कलकत्ते वाली, तेरा वचन न जाए खाली'...कई बार खेल-खेल में हम इसको बोल उठते हैं। लेकिन बंगाल के लोग आध्यात्मिक विश्वास से इससे जुड़े हैं। बंगाल की पहचान ही महाकाली क्षेत्र के रूप में हो चुकी है। यहाँ के लोग सदियों से शक्ति उपासक रहे हैं। यही कारण है कि घर-घर शक्ति की देवी काली-दुर्गा की पूजा की जाती है। राजधानी कोलकाता में कालीघाट और दक्षिणेश्वर मंदिर इसका प्रमाण है तो वहीं रामकृष्ण परमहंस और माँ शारदा की तपशक्ति से हम सभी परिचित हैं। कोलकाता ही नहीं, बंगाल के कई जगहों पर माँ काली विराजमान हैं जो कि तीर्थ करने वालों को आकर्षित करते हैं। ऐसा ही एक तीर्थ है, तारापीठ जो कि महानगर कोलकाता से लगभग 222 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है। तारापीठ पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में पड़ता है जो कि शक्तिपीठों का स्थान है। जानकारी हो कि 51 शक्तिपीठों में से पांच शक्तिपीठ इसी जिले में है जो बकुरेश्वर, नालहाटी, बन्दीकेश्वरी, फुलोरा देवी और तारापीठ के नाम से विख्यात है। इनमें से तारापीठ सबसे प्रमुख धार्मिक स्थल और एक सिद्धपीठ भी है। यहाँ की संस्कृति को महसूस करने के लिए आध्यात्मिक जगहों का दौरा आवश्यक हो जाता है।

तारापीठ का पौराणिक सन्दर्भ

जब सती के पिता दक्ष ने जानबूझकर शिव को अपने द्वारा आयोजित महान यज्ञ "अग्नि यज्ञ" में आमंत्रित नहीं किया तब शिव की पत्नी सती ने अपमानित महसूस किया और माता सती ने पिता के द्वारा शिव के अपमान पर यज्ञ कुंड में कूदकर अपनी जान दी तो शिव महातांडव करने लगे। वे माता के मृत शरीर को कंधे पर लिए तांडव करते हुए ब्रह्मांड के विनाश को आतुर हो गए। तभी भगवान विष्णु ने शिव का क्रोध शांत करने के लिए अपने सुदर्शन चक्र

से माता के शरीर को छिन्न- भिन्न कर दिया। ऐसे में माता सती के शरीर के अंग भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में जाकर गिरे। जिन स्थानों पर शरीर के अंग गिरे, वे विभिन्न रूपों में देवी की पूजा के केंद्र बन गए हैं। हिन्दुओं के इस महातीर्थ में माता सती के आँख की पुतली का तारा गिरा था। यही कारण है कि इसका नामकरण तारापीठ के रूप में हुआ।

तारापीठ राजा दशरथ के कुलपुरोहित वशिष्ठ मुनि का सिद्धासन भी है। बताया जाता है कि प्राचीन काल में महर्षि वशिष्ठ ने यहाँ माँ तारा की आराधना करके सिद्धियाँ प्राप्त की थी। उस समय उन्होंने मंदिर का निर्माण करवाया था लेकिन कालांतर में वो मंदिर जमीन के नीचे धंस गया। बाद में 'जयव्रत' नामक एक व्यापारी ने इसे फिर से बनवाया।

तारापीठ से 2 कि.मी. की दूरी पर आटला गाँव है जहाँ वामाखेपा का जन्म हुआ था। गरीबी और विपत्ति से जूझते हुए उन्होंने माँ की आराधना की और अल्पायु में सिद्धि प्राप्त की। काली पूजा की रात में वामाखेपा को साधना के दौरान माँ तारा ने दर्शन दिए। महज 18 साल की आयु में सिद्धि प्राप्त करने वाले इस संत ने 72 साल की आयु में तारापीठ के महाशमशान में अपने प्राण त्याग दिए।

अघोरियों के लिए ये स्थान बेहद पवित्र माना जाता है। तंत्र साधना के लिए इस स्थान को उपयुक्त बताया गया है। तारापीठ मुख्य मंदिर के सामने ही महाशमशान है। महाशमशान में ही यहाँ तारा देवी का पादपद मंदिर है। दिलचस्प बात है कि यहाँ की द्वारिका नदी दक्षिण से उत्तर की दिशा में बहती है जबकि भारत की अन्य नदियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं। पीठों में, तारापीठ एक सिद्ध पीठ है, जो ज्ञान, खुशी और सिद्धियाँ ("अलौकिक शक्तियाँ") प्रदान करता है।

**माँ तारादेवी का अद्भुत रूप**

ये एक मध्यम आकार का मंदिर है। मंदिर में आदिशक्ति के कई रूपों को दिखाया गया है। देवी की तीन आँखों को यहाँ देखा जा सकता है जिसे तारा भी कहा जाता है। साथ ही भगवान शिव की प्रतिमा भी यहाँ मौजूद है। गर्भगृह में माँ तारा का निवास है जहाँ एक तीन फीट की धातु निर्मित मूर्ति है। माँ तारा की मौलिक मूर्ति देवी के रौद्र और क्रोधित रूप को दिखाता है। इसमें माँ तारा को बाल शिव को दूध पिलाते दर्शाया गया है।

बताते हैं कि वशिष्ट मुनि ने यहां कठोर तपस्या करते हुए तीन लाख तारा मंत्रों के जाप किये थे जिससे प्रसन्न होकर माता तारा उनके समक्ष पकट हुई। वशिष्ठ के अनुरोध पर देवी ने उन्हें भगवान शिव को दुग्ध-पान कराते हुए मातृ स्वरुप में दर्शन दिये जिसके उपरांत वे शिलामूर्ति में परिवर्तित हो गईं। बाद में द्वारिका नदी के तट पर स्थित श्मशान, जहां वशिष्ट मुनि ने तपस्या की थी, से प्राप्त तारा मां की शिलामयी प्रस्तर मूर्ति को मुख्य तारा मंदिर में लाकर प्रतिष्ठित किया गया है जिसके उपर देवी की चांदी की मुखाकृति आवेष्ठित कर दी गई है जिसका दर्शन-पूजन श्रद्धालुगण करते हैं। प्रतिदिन देर रात्रि में भक्तों को देवी तारा के शिलारूप का दर्शन कराया जाता है।

जानकर हैरानी होगी कि यहाँ प्रसाद के तौर पर शराब भी पेश किया जाता है। तांत्रिक साधु इसे न केवल माता को चढ़ाते हैं बल्कि पीते भी हैं। इतना ही नहीं, यहाँ पर रोज़ जानवरों की बलि दी जाती है। तंत्र शक्ति को मानने वालों के लिए कामाख्या की तरह ही तारापीठ का महत्व है। तारापीठ आने से तांत्रिकों के लिए सिद्धि प्राप्त करना बेहद आसान हो जाता है। मंदिर के निकट स्थिति प्रेत-शिला में लोग पितरों की आत्मा की शांति के लिए पिंड दान करते हैं। मान्यता है कि यहाँ भगवान राम ने भी अपने पिता का तर्पण और पिंडदान किया था। यहाँ देश-विदेश के पर्यटक अपनी मनोकामना पूरी करने आते हैं।

धार्मिक ग्रंथों में करूणामयी तथा कल्याणमयी तारा मां के आठ रूपों की चर्चा है, जो उग्र तारा, नील सरस्वती, एकजटा भवानी, महोग्रा, कामेश्वरी, चामुण्डा, वज्र और भद्रकाली आदि नामों से भी जानी जाती हैं। वशिष्ठ मुनि द्वारा पूजित होने के कारण माँ का एक नाम वशिष्ठ आराधित तारा भी है। तारापीठ मंदिर तथा माता के चमत्कार को लेकर कई किस्से मौजूद हैं। ऐसी मान्यता है कि जो भी यहाँ आकर मनोकामना के लिए ध्यान करते हैं, उनकी मनोकामना ज़रूर पूरी होती है।

# होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली - एक सामान्य परिचय

**डॉ. हिरल खत्री (बी.एच.एम.एस.)**
**पत्नी श्री जितेन्द्र कुमार खत्री, स.ले.प.अ.**

होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली का अविष्कार डॉक्टर हैनिमैन ने किया था। उन्होंने 24 साल की अवस्था में एम.डी. एलोपैथी की डिग्री प्राप्त कर 10 वर्षों तक एलोपैथी की प्रैक्टिस भी की, लेकिन इस उपचार को अपूर्ण तथा दोषपूर्ण समझकर इसका परित्याग कर दिया। उसके बाद वे पुस्तकों का अनेक भाषाओँ में अनुवाद करने लगे तब डॉक्टर कॉलेन की लिखी हुई अंग्रेजी पुस्तक 'मेटेरिया मेडिका' का जर्मन भाषा में अनुवाद करते समय 'सिनकोना'नामक दवा की व्याख्या देखकर उन्होंने यह दवा स्वयं सेवन की, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें मलेरिया रोग हो गया। इससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकला कि किसी भी दवा में रोग उत्पन्न करने और उसका नाश करने की शक्ति होती है।

इस प्रयोग के बाद उन्होंने कई प्रयोग किए और ऐसे ही होमियोपैथी का अविष्कार हुआ। होमियोपैथी ‘सम: समम शमयति (Similia similibus curentur) या समरूपता (Let likes be treated by likes)’ के सिद्धांत पर कार्य करता है (अर्थात जो दवा रोग को उत्पन कर सकती है उसे नाश भी कर सकती है)|

होमियोपैथी के अनुसार यदि किसी पदार्थ से एक स्वस्थ व्यक्ति में बीमारी के लक्षण होने लगते हैं, तो वही पदार्थ उसे थोड़ी सी मात्रा में देने पर वह ठीक हो सकता है।

होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली का इस्तेमाल स्वास्थ्य को बनाये रखने और दीर्घकालीन रोगी का इलाज करने में किया जाता है। वहीं खरोंच या अन्य प्रकार की छोटी-मोटी चोटों का इलाज करने के लिए भी यह फायदेमंद है। हालाँकि, कुछ गंभीर रोग हैं, जिनका इलाज करने के लिए होमियोपैथी उपयुक्त नहीं है। इनमें मुख्य रूप से कैंसर, हृदय रोग, गंभीर संक्रमण और अन्य आपात स्वास्थ्य समस्याएं आदि शामिल है।

होमियोपैथी में ना सिर्फ रोग का इलाज किया जाता है अपितु उसके कारण को जड़ से ख़त्म करके व्यक्ति को फिर से स्वस्थ भी किया जाता है।

होमियोपैथी में दवाओं को एक विशेष मानक रखकर और पूरी तरह नियमों का पालन करके बनाया जाता है। एक सही मात्रा होने के कारण ये शरीर के किसी अंदरूनी अंग को नुकसान नहीं पहुंचाती तथा इन दवाओं को बनाते समय किसी रंग, फ्लेवर या किसी अतिरिक्त सामग्री को शामिल नहीं किया जाता है। इसलिए ये बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं को भी दी जा सकती हैं।

होमियोपैथी में व्यक्ति के रोग का इलाज नहीं अपितु रोगग्रस्त व्यक्ति का इलाज किया जाता है। रोगी का जड़ से इलाज किया जाता है जो मॉडर्न मेडिसिन सिस्टम में संभव नहीं है।

होमियोपैथी में रोग का निदान होमियोपैथ द्वारा किया जाता है, जिसमें रोगी के लक्षणों की जाँच ही नहीं साथ ही साथ उसका समस्त शारीरिक परिक्षण और उसके स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रश्न और मानसिक स्थिति की भी जाँच की जाती है।

मानसिक स्थिति के लिए उसके जीवन की स्थिति, चिंता, भय, तनाव और अन्य मानसिक दबाव आदि के बारे में पूछा जाता है।

होमियोपैथी में इलाज मॉडर्न मेडिसिन ट्रीटमेंट सिस्टम से काफी अलग है। एलोपैथी दवाएं मुख्य रूप से रोग के लक्षणों को कम करने पर ध्यान केंद्रित करती है, वहीँ होमियोपैथी दवाओं की मदद से व्यक्ति के स्वास्थ्य को शक्ति प्रदान की जाती है ताकि वह स्वयं रोग से लड़ सके। रोग के कारण के अनुसार दवाएं और उसकी खुराक निर्धारित की जाती है।

वर्तमान में होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति में कई सामान्य से गंभीर रोगों का इलाज सम्भव हो चूका है, यथा: जीवन शैली से संबंधित विकार, एलर्जी, डेंगू बुखार, गुर्दे की पथरी, साइनोसाइटिस, स्व - प्रतिरक्षित विकार |

होमियोपैथी से कई भ्रम जुड़े हैं,

1. होमियोपैथी और एलोपैथी दवाओं का सेवन एक साथ नहीं कर सकते, लेकिन ऐसा नहीं है। होमियोपैथी दवाओं को अन्य पारम्परिक उपचारों के साथ लिया जा सकता है।
2. होमियोपैथी दवाओं के असर में काफी लम्बा समय लगता है, लेकिन ऐसा नहीं है। अपितु ये दवाएं त्वरित प्रभाव दिखाती है।

होमियोपैथी दवाओं के प्रभाव के लिए उसका कोर्स पूरा करना आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक दवा एक निश्चित तरीके से कार्य करती है और यह बीमारी की गंभीरता पर निर्भर करता है।

होमियोपैथी दवाएं कैसे ली जाएँ?

- कुछ भी खाने के पांच मिनट बाद ही दवा लें।
- कोई गंध वाली चीजे जैसे इलायची, लहसुन, प्याज या पिपरमिंट खाई है तो 30 मिनट के बाद ही दवा लें तथा इस दौरान कॉफ़ी ना पियें, ये दवा के असर को कम कर देती है।
- दवा को निगलने या चबाने के बजाय चूसकर ही खाएं क्योंकि दवा का असर जीभ के जरिये होता है। दवा खाने के पांच मिनट तक कुछ ना खाएं।
- दवा हाथ में ना ले क्योकिं हाथ में आते ही उसमे मौजूद अल्कोहल वाष्पीकृत होने के कारण उसका असर कम हो जाता है। इसलिए दवा को ढक्कन या कागज पर रख कर खाने को कहा जाता है।

होमियोपैथी दवायें अल्कोहल में तैयार की जाती हैं जो काफी कड़वा होता है, जिससे मुँह में छाले पड़ने की आशंका रहती है, इसलिए इसे सफ़ेद मीठी गोलियों में डालकर दिया जाता है।

आशा करती हूँ, इस लेख के माध्यम से मैं आपके मन में होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली के बारे में व्याप्त भ्रम को दूर कर पाई होंगी तथा आप इस चिकित्सा प्रणाली के प्रति सहज हो पाए होंगे।

# समाज, धर्म और राजनीति -एक निजी अंतर्यात्रा

धीरज कुमार रॉय
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

जैसे मानव इतिहास में मध्यकाल में सामाजिक संगठन का आधार धर्म होता था वैसे ही आधुनिक काल में सामाजिक संगठन का आधार राजनीति होती है। इसलिए मध्यकाल में मनुष्य के राजनीतिक निर्णय भी धर्म से जुड़े रहते हैं, आधुनिक काल में धार्मिक कार्यकलाप भी राजनीति से ज़ुड़े रहते हैं। चूँकि मध्यकाल की चेतना धर्म थी इसलिए धार्मिक समुदायों-सम्प्रदायों के बीच टकराहटें भी "साम्प्रदायिकता" नहीं कहलातीं थी। आधुनिक काल की चेतना राजनीति है इसलिए धर्म का राजनीतिक इस्तेमाल होता है। राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म के उपयोग को साम्प्रदायिकता कहा जाता है। धर्म जब युगीन चेतना का रूप था तब 'सम्प्रदाय' का अर्थ एक 'धर्म' के भीतर विश्वास की भिन्नता होता था। जैसे 'ब्राह्मण' धर्म में शैव और वैष्णव। 'हिन्दू' नामक कोई धर्म नहीं था। शैवों और वैष्णवों में रक्तरंजित संघर्ष तक हुए हैं। लेकिन इन सम्प्रदायिक संघर्षों को साम्प्रदायिकता नहीं कहा गया।

बाहरी आक्रमणकारी भारत आये तो उनमें अधिकतर का धर्म अलग था। उन्होंने व्यापारियों को लूटा, मंदिरों को लूटा, राजकोष को लूटा, जहाँ सम्पत्ति हो सकती थी, उसे लूटा। लेकिन यह लूट तभी तक थी जब तक हमला था। इन में जो लोग बस गये, वे भारतीय समाज के अंग बन गये। धर्म अलग बना रहा तब भी सांस्कृतिक रूप में वे घुलमिलकर एक हो गये। उनकी भाषा एक, उनका साहित्य एक, उनका संगीत एक, उनकी चित्रकला एक, बहुतायत में उनका पहनावा एक, रहन-सहन एक। इस तरह एक नये संश्लिष्ट समाज का अभ्युदय हुआ जिसने आधुनिक धर्मनिरपेक्ष समाज की आधारशिला रखी।

अजीब बात है कि धार्मिक चेतना के युग में 'शासकों' ने जबरन धर्मांतरण की अत्याचारपूर्ण घटनाओं को छोड़कर व्यापक जनसमुदाय के बीच धार्मिक उत्पात नहीं किया। वरन स्वयं यहाँ के निवासियों का धार्मिक आचरण अपनाया। अकबर ने महल में कृष्ण का मंदिर बनवाया, सूर्योपासना का पालन किया, राजसत्ता के ख़िलाफ़ 'जिहाद' छेड़ने वालों को नेस्तनाबूत किया। वह संसार का पहला शासक था जिसने राज्यसत्ता द्वारा धार्मिक टकराव का दमन किया।

मुझे इस बहस में कोई दिलचस्पी नहीं है कि कौन महान था या कौन तुच्छ था। वह अलग समय था और उसका आकलन अलग तरीके से होगा। सामाजिक संश्लिष्टता की जो धर्मनिरपेक्ष संस्कृति अधुनिक युग को मिली थी, उसका शीर्षस्थ प्रतिमान 1857 है जब विदेशी शासन के अत्याचार और शोषण से मुक्ति के लिए भारत के किसान, कारीगर और राजा-ज़मींदार सब मिलकर लड़ रहे थे। चूँकि समाज में उस तरह का धार्मिक बँटवारा नहीं था, किसानों में हिन्दू-मुसलमान दोनों थे, ज़मींदारों में भी हिन्दू-मुसलमान दोनों थे, हर स्तर पर दोनों घुले-मिले थे इसलिए दोनों एकजुट होकर साम्राज्यवाद से लड़े।

यह देखने की बात है कि साम्राज्यवाद की परिघटना आधुनिक युग की देन है हालाँकि साम्राज्यों की स्थापना प्राचीन काल से होती आयी है। लेकिन दोनों तरह के साम्राज्यों की प्रकृति में मूलभूत अंतर है। जिसे साम्राज्यवाद कहते हैं, वह एक देश या जाति द्वारा दूसरे देश और समाज की लूट के लिए कायम दमनकारी सत्ता है। इस लूट के केंद्र में पूँजी है। इसीलिए पुराने शासक या तो समाज को बदल देते थे जैसा मध्यपूर्व और अफ्रीकी देशों में हुआ, अथवा स्वयं बदल जाते थे जैसा भारत में हुआ। लेकिन दोनों घुलमिलकर एक हो जाते थे। आधुनिक साम्राज्यवादी अपना अलगाव और श्रेष्ठता बनाये रखते हैं, वे घुलते-मिलते नहीं, नफ़रत से परिचालित होते हैं।

पुराने साम्राज्य व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा या धार्मिक प्रचार के लिए स्थापित किये जाते थे, नये साम्रज्य पूँजी बढ़ाने और सम्पत्ति लूटने के लिए स्थापित किये गये। इस उद्देश्य में शासितों की, उपनिवेशों की जनता के बीच एकता सबसे बड़ी बाधा थी। इसलिए 1857 के बाद समाज को विभाजित करने की सोची-समझी रणनीति अपनायी गयी। धर्म की चेतना का युग अभी-अभी बीता था, समाज पर 'विधर्मियों' का शासन रह चुका था, इसलिए धर्म के आधार पर समाज के विखण्डन की रणनीति अपनायी गयी।

इस तरह राजनीतिक उद्देश्य के लिए, सत्ता के हित में, धार्मिक विखण्डन की प्रक्रिया से साम्प्रदायिकता का उदय हुआ। यह बात सभी स्वतंत्रता सेनानी कहते रहे हैं कि साम्प्रदायिकता भारत में अँग्रेज़ी साम्राज्यवाद की देन है, वह हमारे सामाजिक जीवन के लिए बेहद घातक है। इसने आज़ादी के बाद भी ब्रिटिश पूँजी को बनाये रखने में मदद की, अमरीकी पूँजी को प्रभावशाली बनने में भी मदद की। अफ़सोस की बात यह है कि देश के विभाजन के बावजूद साम्प्रदायिकता की आँच को धीमे-धीमे बनाये रखा गया और जब-जब संकट के लक्षण प्रकट हुए तब-तब उसे हवा दी गयी। नब्बे के आसपास ऐसी परिस्थितियाँ बनीं कि सारी पूँजीवादी राजनीति धर्म के इर्द-गिर्द एकत्र होने लगी। यही समय नयी 'उदारवादी' आर्थिक नीतियों का है जिसके तहत अमरीकी पूँजी और विश्व बैंक का क़र्ज़ बड़े पैमाने पर आया।

क्या यह संयोग है कि 1857 से 1947 तक ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में धार्मिक विभाजन का सफल प्रयोग हो जाने के बाद 1990 के आसपास अमरीकी पूँजी के आगमन के साथ फिर धार्मिक विखण्डन का उपयोग हुआ? अब फिर इस प्रयोग में इतनी उग्रता लायी गयी कि तर्क, विवेक, सहिष्णुता के स्वर हमले का निशाना बनाये जाने लगे। इन सभी परिस्थितियों का अमरीकी पूँजी से सम्बंध है। इन तथ्यों को परखने के लिए एक ही बात काफ़ी है कि 1990 के बाद आनेवाली हर सरकार एक से बढ़कर 'उदारीकरण' के रास्ते पर दौड़ लगाती रही है। जो दल 'स्वदेशी' के लिए जागरण-मन्त्र फूँकते थे, वे उदारीकरण के सबसे बड़े समर्थक निकले। इस तरह, साम्राज्यवादी पूँजी और अंधराष्ट्रवादी चिंतन, उदारीकृत आर्थिक नीति और संकीर्णतम सांस्कृतिक बोध का अद्भुत विरोधाभासी समय परिदृश्य पर उपस्थित है।

इस दौर में किसी निर्णय का कोई तार्किक आधार नहीं समझा जा सकता। खासकर पूँजी की संस्थाओं के निर्णय का। सरकारों का भी। इन बातों को समझ से परे होना ही है क्योंकि ये निर्णय राजनीति में धर्म के प्रवेश की गैर-आधुनिक प्रवृत्ति का नतीजा हैं। यह प्रवृत्ति इतना मतान्ध कर देती है कि राजनीति मूल्यांध हो जाती है। हमारे बौद्धिक भी उदारीकरण के साथ उत्तर-आधुनिकता के घोर समर्थक हो गये थे। अस्मिता की रणनीति जत्तर-आधुनिकता की देन है। जब आप छोटी-छोटी अस्मिताओं की राजनीति करेंगे तो बड़ी अस्मिताओं की भी अवहेलना होगी और वह पहले छोटी अस्मिताओं को किनारे करेगी, फिर उसे पचा लेगी। क्या यही नहीं हो रहा है? इसका मुक़ाबला चुनावी जोड़-तोड़ से हीं किया जा सकता।

बेशक़, इस समस्या के अन्य अनेक पहलू हैं जिन पर अधिक विचार-विमर्श की ज़रूरत है। केवल विमर्श की नहीं। उन पर आगे फिर कभी। लेकिन अभी यह पुनः स्पष्ट करना आवश्यक है कि मध्यकालीनता से समाज को निकालकर आधुनिकता तक लाने और उत्तर-आधुनिकता को रोकने का दायित्व जिन सामाजिक शक्तियों का है, वे ख़ुद ही ग़फ़लत में रहती आयी हैं, उनके महारथी अपने समूह को ही एकताबद्ध नहीं कर सके हैं। इसलिए समाज के आगे कोई वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य, कोई समांतर सांस्कृतिक बोध और आत्मविश्वास पूर्ण इतिहास दृष्टि नहीं दे पाये हैं। इसे समांतर नैरेटिव कहते हैं। बिना अपने नरेटिव के वे कुछ नहीं कर सकेंगे, जोड़-तोड़ चाहे कर लें। अंत मे सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कालजयी पंक्तियो के साथ अपनी बात को समाप्त करना चाहता हूँ :

***"प्रश्न जितने बढ़ रहे घट रहे उतने जवाब***
***होश में भी एक पूरा देश यह बेहोश है।***
***क्या ग़ज़ब का देश है, यह क्या ग़ज़ब का देश है।"***

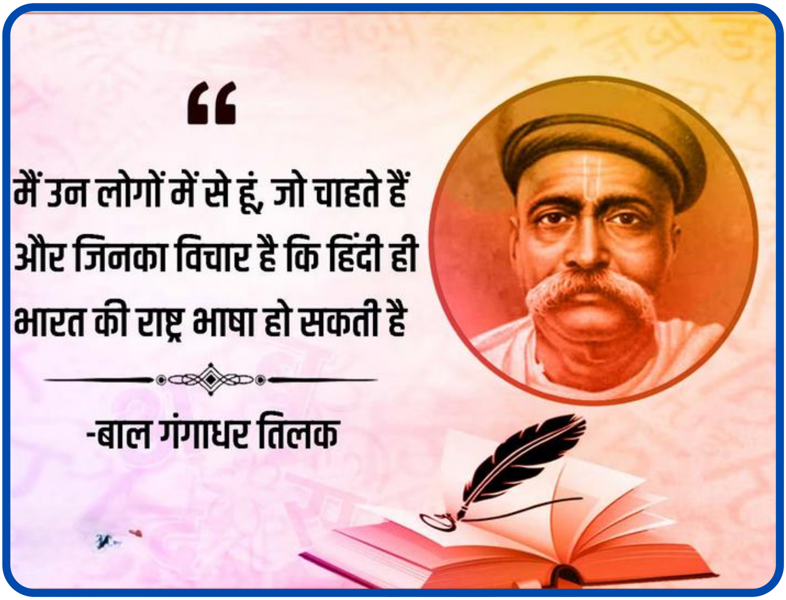

# एक अटूट बंधन

**फूल सिंह**
**हिंदी अधिकारी**

राजेश अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। अपनी पढ़ाई पूरी करने पश्चात वह रोजगार की तलाश में था। उसके पिता का अच्छा कारोबार था और घर में किसी भी चीज की कोई कमी नहीं थी। समय आने पर राजेश को एक अच्छी कंपनी में नौकरी भी मिल गई। उसके माता-पिता भी अपने बेटे की नौकरी से बहुत खुश थे। वे चाहते थे कि बेटे के लिए कोई सुयोग्य वधु मिल जाए और जल्दी से शादी कर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाएं। लेकिन यह तो विधाता ही जानता है।

समय आने पर राजेश की शादी धूमधाम से एक संपन्न परिवार में हो गई। उसकी पत्नी का नाम सीमा था। दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे। सीमा भी अपने ससुराल में खुश थी। वह अपने सास-ससुर का बहुत सम्मान करती थी इसलिए उसे अपने ससुराल में कभी किसी भी चीज की कमी महसूस नहीं हुई। देखते-देखते उनकी शादी के दो वर्ष बीत गए। उनका परिवार एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा था।

बीच में एक दौर ऐसा भी आया कि सीमा के घर वालों ने उनके पारिवारिक जीवन में हस्तक्षेप करना शुरु कर दिया। उसकी माँ ने सीमा के मन में राजेश के प्रति नफरत भरना शुरु कर दिया। वह जब कभी भी सीमा की ससुराल में आती तो उनके परिवार के बारे में गलत धारणा बनाकर सीमा को उकसाने का काम करती। सीमा को समझ नहीं आ रहा था कि वह इस स्थिति में क्या करे। अपनी माँ की बातों में आकर सीमा हर रोज अपने पति के साथ झगड़ा करती और तरह तरह के बहाने बनाकर अपनी माँ के घर चली जाती। कुछ दिन माँ के घर में रहकर वह अपने ससुराल में लौट आती। कुछ दिन शांति से गुजरने के बाद फिर वही नोंक-झोंक शुरु हो जाती।

राजेश को भी स्थिति को समझने में देर नहीं लगी। एक रात उसने सीमा से पूछ ही लिया कि आखिर बात क्या है और वह क्या चाहती है? सीमा ने सीधे शब्दों में बोल दिया कि मैं अब इस घर में नहीं रहना चाहती हूँ और तुमसे तालाक लेना चाहती हूँ। हम अपनी-अपनी राहें अलग कर लेते हैं। पहले तो राजेश को लगा कि वह उसके साथ मज़ाक कर रही है। उसने उससे फिर पूछा कि तुम मेरे साथ मज़ाक कर रही हो या सत्य बोल रही हो। सीमा ने कहा कि मैं सच में आपसे तालाक लेना चाहती हूँ। अब मैं और अधिक समय आपके साथ नहीं रह पाउंगी। अगली सुबह सीमा ने अपना सामान समेटा और अपने मायके चली गई।

सीमा के मायके में चले जाने के कुछ समय बाद उसकी माँ ने बेटी के तलाक के लिए कोर्ट में मुकदमा दर्ज कर दिया। कुछ दिन गुजरने के बाद राजेश को कोर्ट में हाजिर होने का समन मिला। समन पढ़ कर राजेश एक पल के लिए अचंभित हो गया। उसे तनिक भी विश्वास नहीं था कि उसकी पत्नी वास्तव में ऐसा कदम भी उठा सकती है। नियत तिथि पर राजेश कोर्ट में उपस्थित होने के लिए चला गया। राजेश के माता-पिता भी उसके साथ थे। उधर से सीमा भी अपने माता-पिता के साथ कोर्ट में उपस्थित हुई। कुछ देर इंतजार करने पश्चात जब उनका नाम पुकारा गया तो दोनों जज साहब के सामने खड़े हुए। जज साहब ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करने पश्चात केस की सुनवाई के लिए अगली तिथि निर्धारित कर दी।

धीरे-धीरे समय गुजरता गया। हर बार केस में दोनों पक्षों का आमना-सामना होता और बाद में अपने-अपने घर चले जाते। एक बार तो जज साहब ने यह बोल दिया कि अगली सुनवाई पर हम फैसला सुना देंगे। अबकी बार सब-कुछ सोच समझ कर आना। राजेश को भी यूँ लगा कि चलो अबकी बार तो फैसला हो जाएगा और रोज-रोज के दुखों से मुक्ति मिल जाएगी। कोर्ट में जज साहब के आते ही सबसे पहले उनके केस की ही सनुवाई थी। जज साहब ने दोनो के माता-पिता से सवाल-जवाब करने के बाद सीमा से पूछा कि क्या तुम वास्तव में तलाक लेना चाहती हो? इस पर सीमा ने बोला कि जज साहब मैं वास्तव में अपने पति से तलाक लेना चाहती हूँ लेकिन उससे पहले मेरी एक इच्छा है। जज भी हैरान हो गया कि वह ऐसी कौन सी इच्छा है जो इसके मन में चल रही। जज साहब ने कहा, बताईये आपकी

क्या इच्छा है? इस पर सीमा ने उत्तर दिया कि मैं एक रात राजेश के साथ रहना चाहती हूँ, उसके बाद हम एक दूसरे से तालाक ले लेंगे। जज साहब बोले, आप तो अपनी ससुराल में जाती नहीं हो और ऐसे में आप कहाँ रहोगी?

इस पर सीमा ने उत्तर दिया कि मैं अपनी ससुराल में नहीं जाउँगी। मैं एक रात के लिए होटल का कमरा बुक कर लूँगी और वहीं पर राजेश को भी बुला लूँगी। सीमा के माता-पिता को उससे यह उम्मीद नहीं थी कि उनकी बेटी ऐसा कुछ कर सकती है। राजेश भी कुछ समझ नहीं पा रहा था कि उसके मन में क्या चल रहा है।

सीमा अपने और राजेश के नाम पर एक होटल में कमरा बुक कर लेती है और राजेश को वहाँ आने के लिए बोलती है। राजेश भी यह सोच कर कि यह उनकी आखिरी मुलाकात है, होटल में पहुँच जाता है। वहाँ पर उसकी पत्नी सीमा पहले से उसका इंतजार कर रही होती है। वह कमरे में चला जाता है तो वहाँ का दृश्य देखकर वह स्तब्ध रह जाता है। उसकी पत्नी एक नई नवेली दुल्हन के रुप में उसके सामने होती है। फिर उनकी बातों का सिलसिला शुरु हो जाता है लेकिन राजेश चुपचाप सारी बातें सुनता रहता है। सीमा उससे अनेकों सवाल करती है लेकिन राजेश उसकी किसी भी बात का उत्तर नहीं देता है। सीमा उसकी दयनीय स्थिति देखकर बहुत परेशान हो गई थी। आखिरकार राजेश सीमा के प्रश्नों का उत्तर देना शुरु कर देता है। वह कहता है कि तुम्हारे जाने के बाद मैं कभी ठीक से रह नहीं पाया हूँ। न ही मेरा खाने-पीने में मन लगता है और न ही किसी काम में। अब तो मुझे जिंदगी से भी कोई शिकायत नहीं रही है। तुम्हारे जाने के बाद मैं बहुत बीमार हो गया था। अब तो मुझे नहीं पता कि मैं कितने दिन जी पाउंगा क्योंकि मैं एक लाईलाज बीमारी से पीड़ित हो गया हूँ। मेरे माता-पिता ने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की है लेकिन नियति को कोई नहीं टाल सकता है। अब तो बस जज साहब से यही निवेदन करूँगा कि वह इस सुनवाई पर हमारा तलाक करवा दे ताकि मैं निश्चिंत होकर इस दुनिया को अलविदा कह सकूँ। मैं अपने माता-पिता को और तड़पते हुए नहीं देख सकता।

अगली सुनवाई पर राजेश और सीमा कोर्ट में उपस्थित होते हैं। जज साहब सीमा से सवाल करते हैं कि तलाक के बारे में आपकी क्या राय है। सीमा तत्काल से उत्तर में कहती है कि मैं अपने पति राजेश के साथ रहना चाहती हूँ। यह मेरी गलती थी कि मैंने अपने जीवन में अपने पति को कभी इज्जत नहीं दी। मैंने हमेशा उनका अपमान किया और हर तरह से प्रताड़ित किया। लेकिन अब मैं सब कुछ समझ चुकी हूँ। जिस रात मैं राजेश के साथ होटल में रुकी थी मुझे सब कुछ समझ में आ गया। मुझे याद है जब मैं नई नवेली दुल्हन के रुप में अपने ससुराल में पहली बार आयी थी तो मेरे पति राजेश की वजह से ही ससुराल में मेरी इज्जत थी। उन्होंने मुझे कभी भी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी। मैं ही कितना पागल थी कि मैं अपने पति को अच्छी तरह से पहचान नहीं पायी। मैंने हमेशा ही उनका तिरस्कार किया जिसका मुझे बेहद अफसोस़ है। मैं जीवन भर अपने पति के साथ रहना चाहती हूँ और उनकी सेवा करना चाहती हूँ।

सीमा की बातें सुनकर जज़ साहब भी हैरान रह गये। दूसरी तरफ सीमा के माता-पिता भी उसकी बातें सुनकर दंग रह गये। उन्हे अपनी पुत्री की मानसिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन के बारे में तनिक भी आभास नहीं हुआ था। कोर्ट में वह अपनी पुत्री का मुँह ताकते ही रह गये। सुनवाई पूरी होने के पश्चात जज़ साहब फैसला सुना देते हैं और खुश होते हैं कि आज एक हँसता-खेलता परिवार टूटने से बच गया। राजेश और सीमा खुशी-खुशी अपने घर चल देते हैं।

# क्यूँ न हम वादियों में खो जाएं

जितेंद्र नाथ शर्मा
वरि. उप महालेखाकार

बड़े शहरों में रहकर आजकल लोगों का मन उदास सा रहने लगा है, भाग-दौड़ की जिंदगी, गंदगी से भरा शहर, बीमारियों को दस्तक देता हुआ, आपसी रंजिश, आए दिन कानून व्यवस्था से जूझना और अपने संस्कारों को भूलना........ये मनुष्य अब शांति की तलाश करने निकल पड़ा है। कोई अपने रिश्तेदारों से मिलने, कोई अपने खुदा-भगवान को ढूँढने तो कोई मित्रों को.... और मुझ जैसा सीधा पहाड़ों का रास्ता नापने।

हाँ उन खुली वादियों में यह गीत गुनगुनाते हुए "वादियाँ मेरा दामन... रास्ते मेरी बाँहें.... जाओ मेरे सिवा तुम कहाँ जाओगे..." वाह! रफ़ी साहब!

मैं भी कुछ इस तरह अपना कीमती समय निकालकर, अपने परिवार सहित, पहाड़ों पर घूमने निकल जाता हूँ। हरी-भरी वादियाँ, बर्फ से ढकी चोटियाँ, घने बाँस, चीड़ व देवदार के वृक्ष, पत्ते और फूलों से लदे बाग-बगीचे, दूधिया नदियों का बहना, उँचाई से गिरते झरने, गर्म पानी के चश्मे, धार्मिक स्थल और चकराते हुए वो टेढ़े-मेढ़े रास्ते, किसी भी सैलानी का मन मोह लेते हैं।

प्रकृति की गोद में बने वो छोटे-छोटे गाँव, खुशहाली में पलते यहाँ के लोग और स्वास्थ्यवर्धक जलवायु, कला-संस्कृति का मेल, सभी यहाँ आकर मिलता है। कई स्थलों पर झीलें भी हैं, जो वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को और लुभावना बनाती हैं....। पर्वतों की श्रृंखलाओं के बीच उगता हुआ सूर्य एक छोटे से गोले के समान दिखाई देता है। सैलानी तो अब रिवर राफ्टिंग(River Rafting), पैराग्लाईडिंग(Paragliding) और स्कीईंग(Skiing) का लुत्फ भी उठा सकते हैं, बस थोड़ी सी जेब गर्म होनी चाहिए।

अब ये न सोचो कि कौन सी जगह पर जाया जाए...भारत एक बहुत ही खुबसूरत देश है और हमारे यहाँ भी स्विटजरलैंड जैसे कई पर्वतीय शहर हैं.... जैसे, श्रीनगर,पटनीटॉप, लेह-लदाख(कश्मीर) शिमला, डलहौजी, चंबा, कुल्लु-मनाली (हिमाचल प्रदेश) नैनीताल, मसूरी, अल्मोड़ा-रानीखेत, और चारधाम आता है (गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ (उत्तरांचल), दार्जिलिंग(पश्चिम बंगाल) गंगटोक (सिक्किम), शिलांग (मेघालय) आदि ये कुछ उत्तर और पूर्वोत्तर के पर्यटन स्थल है जहाँ आप सर्द हवाओं का भरपूर आनंद ले सकते हैं। वैसे भारत के अन्य भागों में (पश्चिम, मध्य और दक्षिण) में भी बहुत सारी जगह हैं जैसे, अराकू-पडेरु, ऊटी, कोडाईकनाल, नीलगिरी हिल्स, कुन्नूर, मुन्नार, पचमड़ी आदि एवं कर्नाटक और महाराष्ट्र के कुछ भागों में भी जाकर कुछ वक्त गुजारा जा सकता है और अपनी जिंदगी का भरपूर आनंद उठाया जा सकता है और साथ में अच्छी सेहत बनी रहेगी।

तो चलो आज ही क्यूँ ना हम वादियों में खो जाएं और ये गीत गुनगुनायें... “वादियाँ मेरा दामन... रास्ते मेरी बाँहें.... जाओ मेरे सिवा तुम कहाँ जाओगे...”

**अरकू घाटी , अरकू**

# राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका

**श्रीकांत कुमार**
**वरिष्ठ लेखापरीक्षक**

*"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।*

भारतवर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है। ग्रामीण परिदृश्य में महिलाओं की बड़ी आबादी है। दुर्भाग्यवश विदेशी शासनकाल में समाज में अनेक कुरीतियां पैदा हुई, जिससे महिलाओं को उत्पीड़न हुआ।

आजादी के बाद महिलाओं का समाज में सम्मान बढ़ा, लेकिन उनके सशक्तिकरण की गति दशकों तक धीमी रही। गरीबी व निरक्षरता महिलाओं की प्रगति में गंभीर बाधा रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हे आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है। विशेषकर कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है।

भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं। अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बडे उदाहरण स्थापित किए हैं।

बदलते समय के साथआधुनिक युग की नारी पढ़-लिख कर स्वतंत्र है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है तथा स्वयं अपना निर्णय लेती है।अब वह चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए विशेष महत्वपूर्ण कार्य करती है।महिलाएँ हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। इसी वजह से राष्ट्र के विकास के महान काम में महिलाओं की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्रनिर्माण के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

भारत में भी ऐसी महिलाओं की कमी नहीं है, जिन्होंने समाज में बदलाव और महिला सम्मान के लिए अपने अन्दर के डर को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। ऐसी ही एक मिसाल बनी सहारनपुर की अतिया साबरी। अतिया पहली ऐसी मुस्लिम महिला हैं, जिन्होंने तीन तलाक के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद किया।

तेजाब पीड़ितों के खिलाफ इंसाफ की लड़ाई लड़ने वाली वर्षा जवलगेकर के भी कदम रोकने की नाकाम कोशिश की गई, लेकिन उन्होंने इंसाफ की लड़ाई लड़ना नहीं छोड़ा। हमारे देश में ऐसे कई उदहारण हैं जो महिला सशक्तिकरण का पर्याय बन रही है।

आज देश में नारी शक्ति को सभी दृष्टि से सशक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसका परिणाम भी देखने को मिल रहा है। आज देश की महिलाएँ जागरूक हो चुकी हैं। आज की महिला ने उस सोच को बदल दिया है कि वह घर और परिवार की ही जिम्मदारी को बेहतर निभा सकती है।

आज की महिला पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर बड़े से बड़े कार्यक्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं। फिर चाहे काम मजदूरी का हो या अंतरिक्ष में जाने का। महिलाएँ अपनी योग्यता हर क्षेत्र में साबित कर रही हैं।

महिला सशक्तिकरण के बिना देश व समाज में नारी को वह स्थान नहीं मिल सकता, जिसकी वह हमेशा से हकदार रही है। महिला सशक्तिकरण के बिना वह सदियों पुरानी परम्पराओं और दुष्टताओं से लोहा नहीं ले सकती। बन्धनों से मुक्त होकर अपने निर्णय खुद नहीं ले सकती। स्त्री सशक्तिकरण के अभाव में वह इस योग्य नहीं बन सकती कि स्वयं अपनी निजी स्वतंत्रता और अपने फैसलों पर आधिकार पा सके।

महिला सशक्तिकरण के कारण महिलाओं की जिंदगी में बहुत से बदलाव हुए।

1. महिलाओं ने हर कार्य में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना शुरू किया है।
2. महिलाएँ अपनी जिंदगी से जुड़े फैसले खुद कर रही हैं।
3. महिलाएँ अपने हक के लिए लड़ने लगी हैंऔर धीरे धीरे आत्मनिर्भर बनती जा रहीहैं।
4. पुरुष भी अब महिलाओं को समझने लगे हैं, उनके हक भी उन्हें दे रहें हैं।
5. पुरुष अब महिलाओं के फैसलों की इज्जत करने लगे हैं। कहा भी जाता है कि – हक माँगने से नही मिलता छीनना पड़ता है और औरतों ने अपने हक अपनी काबिलियत से और एकजुट होकर मर्दों से हासिल कर लिए हैं।

उपसंहार

जिस तरह से भारत आज दुनिया के सबसे तेज आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के विरुद्ध बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा जो समाज की पितृसत्तात्मक और पुरुषयुक्त व्यवस्था है। यह बहुत आवश्यक है कि हम महिलाओं के विरुद्ध अपनी पुरानी सोच को बदलें और संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाए।

भले ही आज के समाज में कई भारतीय महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, वकील आदि बन चुकी हो, लेकिन फिर भी काफी सारी महिलाओं को आज भी सहयोग और सहायता की आवश्यकता है। उन्हें शिक्षा, और आजादीपूर्वक कार्य करने, सुरक्षित यात्रा, सुरक्षित कार्य और सामाजिक आजादी में अभी भी और सहयोग की आवश्यकता है। महिला सशक्तिकरण का यह कार्य काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत की सामाजिक-आर्थिक प्रगति उसके महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक प्रगति पर ही निर्भर करती है।

महिला सशक्तिकरण महिलाओं को वह मजबूती प्रदान करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए। इक्कीसवीं सदी नारी जीवन में सुखद सम्भावनाओं की सदी है। महिलाएँ अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं। आज की नारी अब जाग्रत और सक्रिय हो चुकी है। किसी ने बहुत अच्छी बात कही है; "नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी, तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पाएगी।"

वर्तमान में नारी ने रुढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है। लोगों की सोच बदल रही है, फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

# पापा का अखबार

सोनाली नाईक
पत्नी श्री आशीष के. सहायक लेखा अधिकारी

सुबह-सुबह सूरज की किरणें
लाती है नया पैगाम
होती है अखबार से
मेरे पापा के दिन की शुरुआत

लेकर अपनी कुर्सी
वो आँगन में बैठ जाते हैं
किचन में चाय बनाती हुई
माँ को आवाज़ लगाते हैं

चाय लेकर माँ बाहर
आँगन में आती है
इंतज़ार में बैठे पापा को
चाय की प्याली थमाती है

लेकर चाय की चुस्की
पापा पढ़ते हैं अखबार
बताते है माँ को सब का हाल
सोने के दाम
मौसम का हाल
क्रिकेट की बातें
शहर में होने वाली
छोटी बड़ी वारदातें
बिना पढ़े ही अखबार
माँ जान जाती है सारी बातें

देख कर नौकरी का इश्तिहार
पापा हमें बुलाकर बताते हैं
इसके लिए पढाई करो
ऐसा हमें समझाते हैं

पढ़ कर सारी खबरें अखबार की
अब खाने के व्यजंनो की विधि
मुझे पढ़कर सुनाते हैं
रात में बेटा आज ये बनाना
ऐसी फरमाइश जताते हैं

ऐसे खत्म हुआ आज का अखबार
पापा को अब इंतज़ार हैं कि
कब आएगा कल का अखबार

# माँ

मीनू सिंह
माता श्री आदित्य कुमार, स.ले.प.अ.

माँ ममत्व का नाम है,
माँ प्राणी अस्तित्व का।
माँ कितना लघु,
किन्तु सबसे महान है।
माँ ज्योति, माँ भक्ति,
माँ देने का नाम, माँ है शक्ति।
माँ त्याग, माँ सेवा,
माँ से पाएं सब जन ज्ञान।
माँ सदा प्रेम सुधा बरसाती है,
हम दूर रहे या पास।
माँ सदैव याद आती है,
माँ का न अपमान करो।
माँ का आँचल है वह आँचल,
जिसमें हर उम्र प्राणी सुख पाता है।
अपनी व्यथा कथा भूलकर,
कुछ क्षण सुख के पा जाता है।
आओ माँ का अभिनंदन करें हम,
माँ से प्रेम का पान करें हम।।

# अधूरे ख़्वाब

सुशील कुमार प्रभात
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बंद कमरों की चारदीवारियों में
एक घुटन सी होने लगी

कितनी बातें थीं
कितने सपने थे
कुछ पूरे हो गए
कुछ अधूरे रह गए

सुबह और शाम का सिलसिला
यूँ ही चलता रहा
पर रात के अंधेरे में
गज़ब का दवंद्व होता
जब सब कुछ साफ दिखता
हाय!
कितना खालीपन, अधूरापन!

उस काले सच में कोई
मिलावट न होती
सब छन कर पाक
बिल्कुल वैसा, जैसा है |

जिस सच से भाग रहा था दिनभर
वो लौट आता है
और फिर वही सवाल पूछता
क्या मायने हैं इन सब के?

किसी बेमतलब सी बातों में उलझकर
वापस सुलझ गया है
कचोटता है,
सोने नहीं देता

समंदर के उस पार
एक अलग ही आशियाना था
कुछ डूबे, कुछ पार कर गए....
अफसोस बस इतना है
हमें तैरना आता था
फिर भी हम किनारे रह गए |

# देर कितनी लगती

परवेश कुमार
डी.ई.ओ.

दिल में घर बनाने में देर कितनी लगती है,
रंजिशें मिटाने में देर कितनी लगती है।

एक 'उम्र लगती है इज़्ज़तें कमाने में,
इज़्ज़तें गँवाने में देर कितनी लगती है।

तीरगी के मौसम में रौशनी तो कर देते,
इक दिया जलाने में देर कितनी लगती है।

साँस का भरोसा क्या डोर है नफ़स की बस,
डोर टूट जाने में देर कितनी लगती है।

ऐतबार उठने से दिल में छेद बनते हैं,
कश्ती डूब जाने में देर कितनी लगती है।

रंजिशों की गिरहें जब दो दिलों में पड़ती हैं,
रब्त टूट जाने में देर कितनी लगती है।

हम भी ख़ुद को बदलें और तुम भी अपनी ज़िद छोड़ो,
फ़ासले मिटाने में देर कितनी लगती है।

लम्हा भर को रुक जाओ इक ज़रा ठहर जाओ,
हाल-ए-दिल सुनाने में देर कितनी लगती है।

ग़म ग़ज़ल में भर देना दर्द नज़्म कर देना,
ग़म छुपाने में देर कितनी लगती है।

# प्रेरणा

अंकिता कोईरी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

तू बनकर किरण
अन्याय को सबक सिखा
तू बनकर कल्पना
आसमान में उड़ान लगा

तू बनकर बिछेंद्री
कर दृढ़ चढ़ाई लक्ष्य पर
तू बनकर सावित्रीबाई
कर हासिल शिक्षा का मुकाम
तू बनकर सरला
उड़ा विमान हौंसले का
तू बनकर सरोज
बन उद्यमी देश का

तू बनकर इंदिरा
राष्ट्र विकास का रथ चला
तू बनकर लता
संगीत को सुर में सजा

तू बनकर वो नारी
समाज को आइना दिखा
तू बनकर वो प्रेरणा
दुनिया को नई राह दिखा
तू बनकर वो प्रेरणा
दुनिया को नई राह दिखा

# बिखरे ख्वाब

चंद्र पाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरे हिस्से में कुछ आएगा क्या?
ये अनगिनत रातों का जागना कोई भर पाएगा क्या
गुमराह भटक रहा हूँ कई दिनों से,
काम हाथ कोई सुकून के राह ले जाएगा क्या?
सूख कर अगर मैं किसी जगह बिखर जाउँ
फिर से खिल सकूँगा, कोई उस राख को गुलशन तक ले जाएगा क्या?
वो जो लफ्ज मेरे अंदर खामोश हो गए
कभी कोई उसे सुन पाएगा क्या?
कुछ तो पत्थर सा हो रहा है मेरे अंदर
वक्त से पहले कोई हकीम को बुलाएगा क्या?
कई किस्से लिखे हैं इस कलम ने मेरे,
कोई बैठकर पास मेरे, उन्हें दोहराएगा क्या?
बखूबी एक भ्रम लिखा गया है आज
“में” और कोई एक ही व्यक्ति है
इसको कोई समझ पाएगा क्या?

# ख्वाबों के पुलिंदे

**शशांक सिंह**
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

वक्त के भारी-भरकम बोझ के तले,
जिंदगी के खुशनुमा एहसास, कहीं दब से गए हैं,
ख्वाबों के पुलिंदे, जो कभी आसमान को चीरते थे,
आज सिमट से गये हैं।

अपने घर के बाहर जिन रास्तों पर मैं कभी सरपट दौड़ता था,
अब साँसें फूलती हैं, पैर लड़खड़ाते हैं।
टूटे-फूटे, उखड़े दरारों और गड्ढों से सने इन रास्तों पर,
मंजिल के हिस्से के छाले, कहीं फूट से गये हैं।

आज अपने घर में बंद हुँ मैं, झरोखों से झांकता हूँ,
रात के अंधियारों सरीखे, काले आसमाँ में,
तारों की तरह टिमटिमाते, हवाओं के धकेलते,
परिंदों के झूंड के, वो आखिरी पक्षी की तरह,
जो कहीं पीछे छूट जाने के जद्दोजहद में उलझे हुए,
अपने परों के थक जाने की बेचैनी और,
मुँह के दानों के गिर जाने के डर के बीच,
मैं खुद को पाता हूँ।
अपने बनाये प्रतिमानों से टकराता हूँ,
खुद को उठाता हूँ।

पर अभी-अभी, जो दिल की धड़कने तेज हुई,
साँसें धकेलने लगी।
पैरों में कुछ आहट आई,, नजरें देखने लगी।
जब अपेक्षाओं के तीर को, इतिहास के तरकश पे रख,
मैं खुद को उसी जगह पाता हूँ।

समंदर के किनारे रेत के मकानों की तरह ढहता हूँ,
जंगल की आग की तरह, खुद ही जल उठता हूँ।
राख के ढेर में हूँ, चिंगारी दबाये हुए हूँ,
मौके की तलाश में हूँ, हवाओं के इंतजार में हूँ।
जो मेरे उपर पड़े इस काले दुशाले को उड़ाकर ले जाए,
जो इस अध-बुझी चिंगारी को फिर से आग बना के ले जाए।

मैं फिर से जल उठूँगा, उमड़ूंगा, धधकूंगा,
मन में टूटे पड़े, फैले विश्वासों को समेटूंगा,
दरिया बनके फिर से, उन पत्थरों से टकराउंगा।
ख्वाबों के पुलिंदे, जो कभी आसमां को चीरते थे,
डोर हाथ में लेके, फिर से उस पतंग को उँचा उड़ाउंगा।।

# गज़ल

**शशांक सिंह**
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

जिंदगी बहुत छोटी है नफरतों के लिए, क्यों न प्यार मोहब्बत से रहा जाए,
किसी भूखे को खाना खिलाया जाए, किसी रोते हुए को हँसाया जाए।

क्यों शिकस्त से अपने मायूस हुए हो,
चलो किसी की जीत का जश्न मनाया जाए।

यहाँ सब अपने हाथों की लकीरों में उलझे हुए हैं,
चलो आज एक नयी किस्मत बनाया जाए।

जब से अंधा हुआ है वो, और दूर तक देखता है,
किसी की चिंगारी से, किसी के घर का चुल्हा जलाया जाए।

यहाँ बंद हैं सब दीवारों में, किसी के दिल में ख्वाब नहीं पलते,
चलो किसी उड़ते हुए अरमानों में, एक नया पंख लगाया जाए।

यहाँ हर एक शख्स भटका हुआ है,
चलो उस बच्चे को उसकी माँ से मिलाया जाए।

मुझे कभी अपने घर की चारदीवारी का सुकून भी रास नहीं आया,
चलो किसी पिंजरे में कैद पंछी को उड़ाया जाए।

सदियों के इस ठंडे सन्नाटे में कितनों ने ठिठुर कर रात बिताई होगी,
चलो उनके लिए उम्मीद की एक नयी किरन जगाई जाए।।

# नदी

सोनाली नाईक
पत्नी श्री आशीष के. सहायक लेखा अधिकारी

जब भी होता है मन परेशान,
आ जाता हूँ मैं नदी के पास
पानी के शोर में इसके सब भूल जाता हूँ
जिंदगी की परेशानियाँ इस में छोड़ जाता हूँ।।

सिखाती हैं मुझे ये कभी न रुकना
जीवन की हर मुश्किल से लड़ना
रोके चाहे कोई भी कठिनाई
पार उन्हें कर अपने लक्ष्य को पाना है।।

रहे मन इसके पानी सा साफ
आये न कभी किसी के लिए बुरी बात
इसके मीठे पानी की तरह रहे बोली
मिले जिसे भी बना ले उसे अपना हमजोली।।

नदी की ही तरह जीवन के एक छोर से
दूसरे छोर तक है जाना
मिले जो भी राह में उसे संग ले के बढ़ना है
नदी की तरह बस आगे चलते जाना है।।

# दोस्ती

**अमित कुमार**
**लेखा परीक्षक**

दोस्ती की राहों में हर दर्द साझा करना,
खुशियों के पलों को हमेशा बढाना।

सच्चे दिल से जो वादा किया है,
उसे हमेशा निभाना, यही हमारी पहचान है।

जीवन की उलझनों में साथ देना,
हर मुश्किल को हल करना।

बिना बात के ही समझना एक दूसरे की बात,
ये दोस्ती की अनमोल कहानी का एक बहुमूल्य हिस्सा है।

हर मोड़ पर, हर रुकावट में,
दोस्ती का साथ बने रहना ही हमारी मंजिल है।

कभी हंसते हंसते, कभी रोते रोते,
एक दूसरे के साथ जीवन के सभी सफरों में होते हैं।

दोस्ती का रिश्ता है ये, अनबन की भावनाओं से परे,
जो बचपन से शुरु होकर जीवन भर साथ चले।

इस रिश्ते को समझना, इसे महसूस करना,
दोस्ती का सच्चाई से वाकिफ होना।

दोस्ती का रिश्ता बिना किसी शर्त के,
दिल से जुड़ा होता है, हर दिन नया दिखाता है।
साथ चलना, साथ बढ़ना,
ये हमारी दोस्ती का सच्चा प्यार है,
ये हमारा सच्चा यार है।

# खोज

सचिन कुमार मीणा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शीशे में खड़े होकर नज़रें मिलाता हूँ,
अक्सर खुद ही मैं अपनी नज़रें चुराता हूँ,
पाने की हद में खुद को न भूल पाता हूँ,
हर बार कतरा-कतरा कम होता जाता हूँ,
इंतिहा जो हो गई तो अब घर को जाता हूँ
वीराने में छोटा सा खंडहर सजाता हूँ,
बचपन की गलियों को मैं क्यूँ यूँ भूलाता हूँ,
गर उम्र थोड़ी ज्यादा कुछ दिन घटाता हूँ।

आवारापन बंजारापन एक खला है सीने में,
हरदम हरपल बेचैनी है कौन बला है सीने में,
जीवन के जिस मोड़ पे आकर कुंठित भागे फिरता है,
मृत्यु के संलग्न से जाना मौत खड़ी है जीने में,
देव असुर का अमृत मंथन, रोज कलाहल होता है,
नाम है तेरा भोला शंकर, विष को चुना है पीने में।

मुर्दा जीने की कोशिश में इस कदर मर गया,
शरीर जलाकर अस्थियों से घड़ा भर गया,
शरीर ने रुह के साँचे में खुद को ऐसे ढाला
जैसे ठंडी बरसातों में दरख्तों का पतझड़ गया,
किसी गुमराह के जाकर बगल में बैठ गया,
मैट्रो का सफर रास न आया,
मैं शटल में बैठ गया।

कैसे बागवां हो तुम जिसे बगीचा भी न गवारा है,
आके मेरा घर तो देख इसे तूफानों ने संवारा है
शरबत की ख्वाहिश होगी तुम्हारे पौधों को
प्यासे ने कब ही कहा, दरिया तेरा पानी खारा है।

# कारवां जिंदगी का

जितेंद्र नाथ शर्मा
वरि. उप महालेखाकार

लेकर निकला था कारवां अपना,
कि कहीं पर बसर करेंगे जिंदगी.......
लेकिन रास्ता इतना कठिन था कि
कार......वहाँ पर ही रह गई,
जिंदगी के दो टायर पंक्चर पाए मैंने
तो दो की हवा निकल गई।।

कैद हुआ था कैमरे में ये हादसा जिंदगी का,
पता चला कि पंक्चर करने वाली मेरी पत्नी निकल गई।
करता क्या न करता, कहता तो भी मरता,
एक दिन बातों-बातों में मेरी जुबान फिसल गई।।

हाथ जोड़ कर मौन रहा, उसकी बातें सुनता रहा,
बोली! कभी ऐसी हिम्मत न करना,
इतना सुनते ही मेरी सारी हेकड़ी निकल गई।

सब जिंदगी के भ्रम में क्यों जीते हैं "शर्मा"
देखा जो........... वो तो केवल था एक सपना,
माता-पिता के बाद वो ही तो एक अपनी थी,
जो मेरे परिवार के प्रति पूर्ण समर्पित थी,
जिसकी बदौलत मेरी जिंदगी खुशी से गुज़र गई।

# यही अस्तित्व मेरा

श्रीकांत कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुना मजदूर है तू
है अस्तित्व क्या तेरा?
लिखा किस अमर पत्र पर
किसने इतिहास तेरा ?
सीकर गिरता रहे
यही पहचान तेरी?
क्या संवेदना नहीं
इस मानव हृदय में ?
यह कैसी निशा आई ?
इस संसार में
होगा क्या इसका कभी सवेरा?
सुना मजदूर है तू
है अस्तित्व क्या तेरा ?
आंख के आंसू तेरे
बनते नहीं शैलाब
इन नंगे पांव से कभी
आती नहीं कराह ?
जो थकते नहीं
निरंतर चलते कदम हजार
क्या भूख की तड़प से
आलीशान इस शहर में
रुकता रहा बसेरा?
सुना मजदूर है तू
है अस्तित्व क्या तेरा ?
हूं नहीं पत्थर
इंसान हूं
हुआ अब नहीं बेबस
सदियों से मैं लाचार हूं
करूं क्या बयां
इस रुंधे कण्ठ से कि
मैं पूंजीवाद का
शिकार हूं?
उसी ने डाला मेरे हिस्से अंधेरा
यही अस्तित्व मेरा।

# इंसान एक किताब

धर्मेन्द्र शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

हर इंसान एक किताब है...
उसमें कई अध्याय हैं,
हर अध्याय में एक नया संदर्भ है।
इस किताब में कई पृष्ठ हैं...
और...
हर पृष्ठ पर एक नई कथा व्यथा है,
कहीं दु:ख है तो कहीं सुख है...
कहीं गलती है तो कहीं एक नई सीख है।

इंसान में कहीं अनुभूतियां हैं तो कहीं अभिव्यक्तियां है,
कहीं स्वाभिमान है तो कहीं दूसरों के लिए सम्मान है।

इंसान निरन्तर एक संघर्ष है...
वो संघर्ष जो उसे;
दिन प्रतिदिन हराता और जिताता है।
उसका संघर्ष ही उसका व्यक्तित्व बनाता है;

उसे ऊँचे मुकाम मिलेंगे या नही...
यह उसका परिश्रम ही सिद्ध कराता है।

कहा जाता है कि इंसान परिस्थितियों का दास है...
इसी कारण वो हताश है, निराश है;
कहीं वो आशावान है तो कहीं सौभाग्यवान है।

उसकी जद्दोजहद ही उसे गढ़ती हैं;
उसे कमज़ोर बनाती हैं;
तो कहीं उसमें ताकत भर देती हैं

उसकी ये दशा...
उसका अस्तित्व बनाती है।

अंत में एक बात और कहूंगा ...
इंसान सोचता कुछ है, करता कुछ और है;
चाहता कुछ है, पाता कुछ और है।

यही तो जिंदगीनामा है...
कहीं सुख और कहीं दुःख पाना है...

इंसान स्वयं की किताब का रचनाकार है...
इसमें कहीं विचार हैं तो कहीं आचार हैं।
ये किताब निराकार है,
विस्तृत है, व्यापक है;
हर इंसान एक किताब है।

# सुनो तुम....!

रितिक कौशिक
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

ज़रा सी बात करने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है,
मुझे आवाज देने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है।

ये तन्हा रात करती है बड़ी बेचैन मुझको अब,
मेरे संग गीत गाने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है।

बढ़ी हैं दूरियाँ दिल की तुम्हें लगता नहीं ऐसा?
ज़रा नजदीक आने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है।

बहुत कुछ तो नहीं मांगा कभी मैंने तेरे दिल से,
ज़रा सा साथ देने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है।

तुम्हारी शख्शियत में ढूँढता रहता हूँ मैं खुद को,
मुझे मुझसे मिलाने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है।

यकीं तो है ज़रा सा इश्क तुम भी हो हमें करते,
यही इक बात कहने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है।

# हर भूमिका निभाना पड़ता है

**हेमा कुमारी**
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

कई कुरीतियों को तोड़ हमें इस दुनिया में आना पड़ता है।
बच गए अगर कोख में तो, इस संसार से भी खुद को बचाना पड़ता है।
हमें ऐसे ही पढ़ने की इजाजत नहीं, घर का काम कर के हमें स्कूल जाना पड़ता है।
डिग्री पा भी ले तो क्या हमें तो मर्यादा में रहना पड़ता है।।

हम ही जानें कितने नज़रों से हमें अपना मान बचाना पड़ता है।
घर की लक्ष्मी बोल हमें पराया धन होने का भी गम उठाना पड़ता है।
छोड़ के अपना घरौंदा हमें किसी और का घर बसाना पड़ता है।
जिस घर में जन्मी वहां भी हमें मेहमान का किरदार निभाना पड़ता है।।

अपने ही हाथों से अपनी चीखें कई बार दबाना पड़ता है।
हमें उस जबर्दस्ती वाले प्यार को भी हंस के गले लगाना पड़ता है।
सर झुका कर हमें अपने घर और ससुराल का आन बचाना पड़ता है।
अकेले रो कर हमें कई बार आंसुओं से गाल भिगाना पड़ता है।।

अपनी ख्वाहिशों का गला घोट बाकी सब के लिए जिंदगी बिताना पड़ता है।
उनकी ख़ुशी के लिए अपने आप को भी भुलाना पड़ता है।
किसी की पत्नी तो किसी की माँ में खुद को सिमटाना पड़ता है।
हर दिन नई मुश्किलें नई चुनौतियाँ से आँख मिलाना पड़ता है।।

लड़की है न हमें तो हर भूमिका निभाना पड़ता है,
हर भूमिका निभाना पड़ता है।।

# घर की दहलीज़

जितेंद्र नाथ शर्मा
वरि. उप महालेखाकार

जब कभी मैं अपने घर से बाहर जाता हूँ,

तो अपने आप को कुछ परेशान,

कुछ भटका हुआ,

कुछ बदनसीब,

तो कुछ कमजोर सा पाता हूँ,

और जब कभी अपनी माँ के घर की दहलीज पर आता हूँ,

तो अपने आप को बहुत हल्का,

बहुत महफ़ूज़, बहुत खुशनसीब,

और बहुत मजबूत सा पाता हूँ।

## हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के तृतीय अंक का विमोचन करते हुए प्रधान महालेखाकार एवं अन्य अधिकारीगण

## हिंदी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार एवं अन्य अधिकारीगण

# कार्यालय में आयोजित साउथ जोन कैरम टूर्नामेंट की कुछ झलकियां

# कार्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम की कुछ झलकियां

## संयुक्त हिंदी पखवाड़ा-2023

इस कार्यालय में दिनांक 14-09-2023 से 27.09.2023 तक संयुक्त हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रतियागिता में शामिल विजेताओं की सूची निम्नलिखित हैः-

| क्र .सं. | प्रतियोगिता का नाम | विजेता | |
|---|---|---|---|
| 1 | पोस्टर प्रतियोगिता | | |
| | प्रथम पुरस्कार | सारधी मिरियाला, स.ले.अ. | |
| | द्वितीय पुरस्कार | वि. प्रियंका, लेखापरीक्षक | |
| | तृतीय पुरस्कार | वेलमल सुदर्शन राव, स.ले.अ. | |
| 2 | प्रशासनिक शब्दावली प्रश्नोत्तरी | हिंदी भाषी | हिंदीतर |
| | प्रथम पुरस्कार | चंद्रपाल वर्मा, डी.ई.ओ. | जी. अनुषा, स.ले.प.अ |
| | द्वितीय पुरस्कार | रवि चंद कुमार, स.ले.प.अ | अरूप बिस्वास, सहा.पर्यवेक्षक |
| | तृतीय पुरस्कार | गौरव शर्मा, स.ले.प.अ | पी. विश्वेश्वर राव, वरि.लेखाकार |
| 3 | भाषण प्रतियोगिता | हिंदी भाषी | हिंदीतर |
| | प्रथम पुरस्कार | चंद्रपाल वर्मा, डी.ई.ओ. | रवि कुमार देसु, स.ले.प.अ |
| | द्वितीय पुरस्कार | अपूर्वा सिंह, क.हि.अ | पी. विश्वेश्वर राव, वरि.लेखाकार |
| | तृतीय पुरस्कार | अंकिता कोईरी, क. हि.अ | चेतन्य, लेखापरीक्षक |
| 4 | कविता पाठ प्रतियोगिता | हिंदी भाषी | हिंदीतर |
| | प्रथम पुरस्कार | शशांक सिंह, डी.ई.ओ. | जी. मेरी सुलक्षणा स.ले.प.अ |
| | द्वितीय पुरस्कार | चंद्रपाल वर्मा, डी.ई.ओ. | अरूप बिस्वास, सहा पर्यवेक्षक |
| | तृतीय पुरस्कार | विनय कुमार, सहा पर्यवेक्षक | जी. अनुषा, स.ले.प.अ |

दुनिया की सबसे ऊंची  डॉ. बी.आर. अंबेडकर की मूर्ति
विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

अरकू वैली: अनछुई खूबसूरत जगह जो मानसून में पूरे निखार पर होती है ।